हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0)

सैय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी (ताबा सराह)

नाम व नसब : आपका नाम अपने जद्दे बुज़ुर्गवार हज़रत रसूले ख़ुदा (स0) के नाम पर मुहम्मद (स0) था और बाक़िर लक़ब। इसी वजह से इमाम मुहम्मद बाक़िर के नाम से मशहूर हुए बारह इमामों में से यह आप ही को खुसूसियत थी कि आपका सिलसिलए नसब माँ और बाप दोनों तरफ से हज़रत रसूले ख़ुदा (स0) तक पहुँचता है। दादा आपके सय्यिदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन (अ0) थे जो रसूले ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफा (स0) के छोटे नवासे थे और वालिदा आपकी उम्मे अब्दुल्लाह फातिमा हज़रत इमाम हसन (अ0) की साहबज़ादी थीं जो रसूल (स0) के बड़े नवासे थे इस तरह हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) रसूल (स0) के बुलन्द कमालात और अली (अ0) और फातिमा (स0) की नसल के पाक खुसूसियात के बाप और माँ दोनों की जानिब से वारिस हुए।

विलादत : आपकी विलादत रोज़े जुमा पहली रजब 57 हिजरी में हुई। यह वह वक़्त था जब इमाम हसन (अ0) की वफात को सात बरस हो चुके थे इमामे हुसैन (अ0) मदीने में ख़ामोशी की ज़िन्दगी बसर कर रहे थे और वक़्त की रफ्तार तेज़ी के साथ वाक़ेआए कर्बला के अस्बाब को फराहम कर रही थी ज़माना आले रसूल (स0) और शीआने अहलेबैत के लिये पुर आशोब था चुन–चुन कर मुहिब्बाने अली (अ0) गिरफ्तार किये जा रहे थे, तलवार के घाट उतारे जा रहे थे या सूलियों पर चढ़ाये जा रहे थे उस वक़्त इस मौलूद की विलादत गोया कर्बला के जिहाद में शरीक होने वाले सिलसिले में एक कड़ी की तकमील थी।

वाक़े–ए–कर्बला : तीन बरस मुहम्मद बाक़िर (अ0) अपने जद्दे बुज़ुर्गवार हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के साये में रहे जब आपका सिन पूरे तीन बरस का हुआ तो इमाम हुसैन (अ0) ने मदीने से सफर किया। इस कमसिनी में मुहम्मद बाक़िर (अ0) भी रास्ते की तकलीफें सहने में अपने बुज़ुर्गों के शरीक रहे इमाम हुसैन (अ0) ने मक्के में पनाह ली फिर कूफा का सफर इख़्तियार किया और फिर कर्बला पहुँचे। सातवीं मुहर्रम से जब पानी बन्द हो गया तो यक़ीनन मुहम्मद बाक़िर (अ0) ने भी तीन दिन प्यास की तकलीफ बर्दाश्त की। यह ख़ालिक़ के मन्शा की एक तकमील थी कि वह रोज़े आशूर मैदाने कुर्बानी में नहीं लाये गये वरना जब इनसे छोटे सिन का बच्चा अली असग़र तीरे सितम का निशाना हो सकता था तो मुहम्मद बाक़िर (अ0) का भी कुर्बानगाहे शहादत में लाना मुमकिन था मगर सिलसिलए इमामत का दुनिया में क़ायम रहना निज़ामे कायनात के बरक़रार रहने के लिये ज़रूरी और अहम था लिहाज़ा मन्जूरे इलाही यह था कि मुहम्मद बाक़िर कर्बला के जिहाद में उसी तरह शरीक हों जिस तरह उनके वालिदे बुज़ुर्गवार सय्यिदे सज्जाद ज़ैनुल आबेदीन (अ0) शरीक हुए आशूर को दिन भर अज़ीज़ों के लाशे पर लाशे आते देखना, बीबियों में कोहराम, बच्चों में तहलका। इमाम हुसैन का विदा होना और नन्ही सी जान

अली असग़र (अ0) तक का झूले से जुदा होकर मैदान में जाना और फिर वापस न आना इमाम के बावफा घोड़े का दरे ख़ेमा पर ख़ाली ज़ीन के साथ आना और फिर ख़ेमए इसमत में एक क़यामत का बरपा होना यह सब मनाज़िर मुहम्मद बाक़िर(अ0) की आँखों के सामने आये और फिर बादे अस्र ख़ेमों में आग का लगना, असबाब का लूटा जाना, बीवियों के सरों से चादरों का उतारा जाना और आग के शोलों से बच्चों का घबराकर सरासीमा व परेशान इधर–उधर फिरना इस हाल में मुहम्मद बाक़िर (अ0) के नन्हें दिल पर क्या गुज़री और क्या तास्सुरात उनके दिल पर क़ायम रह गये इसका अन्दाज़ा कोई दूसरा इन्सान नहीं कर सकता।

ग्यारह मुहर्रम के बाद माँ और फूफी, दादी, नानी और तमाम ख़ानदान के बुज़ुर्गों को दुश्मनों की क़ैद में असीर देखा। यक़ीनन अगर सकीना(स0) का बाज़ू रस्सी में बंध सकता था तो यक़ीन किया जा सकता है कि मुहम्मद बाक़िर (अ0) का गला भी रेसमाने ज़ुल्म से ज़रूर बाँधा गया। कर्बला से कूफा और कूफे से शाम और फिर रिहाई के बाद मदीने की वापसी इन तमाम मनाज़िल में न जाने कितने सदमे थे जो मुहम्मद बाक़िर (अ0) के नन्हे से दिल को उठाना पड़े और कितने ग़म व अलम के नक़्श थे जो दिल पर ऐसे बैठे कि आईन्दा ज़िन्दगी में हमेशा बरक़रार रहे।

तरबियत : वाक़ेअए कर्बला के बाद इमाम ज़ैनुलआबेदीन (अ0) की ज़िन्दगी दुनिया की कशमकशों और आवेज़िशों से बिलकुल अलग निहायत सुकून और सुकूत की ज़िन्दगी थी। अहले दुनिया से मेल–जोल बिलकुल तर्क कभी मेहराबे इबादत और कभी बाप का मातम इन ही दो मशग़लों में तमाम औक़ात सर्फ होते थे यह ही ज़माना वह था जिसमें इमाम मुहम्मद बाक़िर ने नशोनुमा पायी। 61 हिजरी से 95 हिजरी तक 34 बरस अपने मुक़द्दस बाप की सीरते ज़िन्दगी का मुताला करते रहे और अपने फितरी और ख़ुदादाद ज़ाती कमालात के साथ उन तालीमात से फायदा उठाते रहे जो उन्हें अपने वालिदे बुज़ुर्गवार की ज़िन्दगी के आईने में बराबर नज़र आती रहीं।

बाप की वफात और इमामत की ज़िम्मेदारियाँ : हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) भरपूर जवानी की मंज़िलों को तय करते हुए एक साथ जिसमानी व रूहानी कमाल के बुलन्द तरीन नुक़्ते पर थे और 38 बरस की उम्र थी जब आपके वालिदे बुज़ुर्गवार हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ0) की वफात हुई हज़रत ने अपने वक़्ते वफात एक सन्दूक़ जिसमें अहले बैत के मख़्सूस उलूम की किताबें थीं इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) के सुपुर्द किया। नीज़ अपनी तमाम औलाद को जमा करके उन सबकी किफालत व तरबियत की ज़िम्मेदारी अपने फ़रज़न्द मुहम्मद बाक़िर (अ0) पर क़रार दी और ज़रूरी वसीयतें फरमायीं इसके बाद इमामत की ज़िम्मेदारियाँ हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) पर आयीं आप सिलसिल–ए–अहले बैत के पाँचवें इमाम हुए जो रसूले ख़ुदा (स0) के बरहक़ जानशीन थे।

उस दौर की ख़ुसूसियतें : यह ज़माना वह था जब बनी उमैय्या की सलतनत अपनी माद्दी ताक़त के लिहाज़ से बुढ़ापे की मंज़िलों से गुज़र रही थी बनी हाशिम पर ज़ुल्मो सितम और ख़ुसूसन कर्बला के वाक़ेए ने बहुत हद तक दुनिया की आँखों को खोल दिया था और जब यज़ीद ख़ुद अपने मुख़्तसर ज़मान–ए–हयात ही में जो वाक़ेए कर्बला के बाद हुआ अपने किये पर पशेमान हो चुका था और इसके बुरे नताएज को महसूस कर चुका था और इसके बाद उसका बेटा

मुआविया अपने बाप और दादा के अफआल से खुल्लम खुल्ला बेज़ारी का इज़हार करके सलतनत से दस्तबरदार हो गया था तो बाद के सलातीन को कहाँ तक इन मज़ालिम के मुहलिक नताएज का एहसास न होता जबकि उस वक़्त जमाअते तव्वाबीन का जिहाद, मुख़्तार और उनके हमराहियों के ख़ूने हुसैन (अ0) का बदला लेने में इक़दामात और न जाने कितने वाक़ेआत सामने आ चुके थे जिनसे सलतनते शाम की बुनियादें हिल गयीं थी इसका नतीजा था कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) के ज़मानए इमामत को हुकूमत के ज़ुल्म व तशद्दुद की गिरफ्त से कुछ आज़ादी नसीब हुई और आपको ख़ल्क़े ख़ुदा की इस्लाह व हिदायत का कुछ ज़ियादा मौक़ा मिल सका।

अज़ाए इमामे हुसैन (अ0) में इन्हेमाक:

आप वाक़ेए कर्बला को अपनी आँख से देखे हुए थे फिर अपने बाप की तमाम ज़िन्दगी का जो इमामे मज़लूम (अ0) के ग़म में रोने में बसर हुई मुताला कर चुके थे यह एहसास भी निहायत तकलीफदेह था कि उनके वालिदे बुज़ुर्गवार बावजूद इतने ग़मो रंज और गिरया व ज़ारी के ऐसा मौक़ा न पा सके कि दूसरों को इमाम हुसैन (अ0) का मातम बरपा करने की दावत देते इसका नतीजा था कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) को इसमें ख़ास एहतेमाम पैदा हुआ। आप मजालिस की बिना फरमाते थे और कमीत बिन ज़ैद असदी जो आपके ज़माने के बड़े शायर थे उनको बुलाकर मरसीए इमामे हुसैन (अ0) पढ़वाते और सुनते थे। यही वह इब्तेदा थी जिसे हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) और इसके बाद फिर इमाम रिज़ा (अ0) के ज़माने में बहुत फ़रोग़ हासिल हुआ।

इल्मी मरजेईयत : दरिया का पानी बंद के बाँध दिये जाने से जब कुछ अरसे तक ठहर जाये और फिर किसी वजह से वह बंद टूटे तो पानी बड़ी कुव्वत और जोशो ख़रोश के साथ बहता हुआ महसूस होगा। अईम्मए अहलेबैत (अ0) में से हर एक के सीने में एक ही दरया था इल्म का जो मोजेज़न था मगर अक्सर औक़ात ज़ुल्म व तशद्दुद की वजह से इस दरिया को प्यासों के सैराब करने के लिये बहने का मौक़ा नहीं दिया गया इमाम मुहम्मद बाक़िर के ज़माने में जब तशद्दुद का शिकन्जा ज़रा ढीला हुआ तो उलूमे अहलेबैत का दरिया पूरी ताक़त के साथ उमडा और हज़ारों प्यासों को सैराब करता हुआ शरीअते हक़–क़ा और अहकामे इलाही की खेतियों को सरसब्ज़ बनाता हुआ दुनिया में फैल गया। इस इल्मी तबह्हुर और वुसअते मालूमात के मुज़ाहरे के नतीजे में आपका लक़ब बाक़िर मशहूर हुआ। इस लफ़्ज़ के माने हैं ''अन्दुरूनी बातों के ज़ाहिर करने वाले'' चूँकि आपने अपने इल्म से बहुत से पोशीदा मतालिब को ज़ाहिर किया इसलिये तमाम मुसलमान आपको बाक़िर (अ0) के नाम से याद करने लगे आपसे उलूमे अहलेबैत (अ0) हासिल करने वालों की तादाद सैकड़ों तक पहुँची हुई थी। बहुत से ऐसे अफ़राद भी जो अक़ीदतन अईम्मए मासूमीन (अ0) से वाबस्ता न थे और जिन्हें जमाअत अहलेसुन्नत अपने मुहद्दिसीन में बुलन्द दर्जे पर समझती है वह भी इल्मी फ़यूज़ हासिल करने इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की ड्योढ़ी पर आते थे। जैसे ज़ुहरी, इमाम औज़ाई और अतार बिन जुरैह, क़ाज़ी हफ़्ज़ बिन ग़यास वग़ैरह यह सब इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) के शागिर्दों में महसूब हैं।

उलूमे अहलेबैत (अ0) की इशाअत :

हज़रत के ज़माने में उलूमे अहलेबैत की हिफाज़त का एहतेमाम हुआ और हज़रत के

शागिर्दों ने उन इफादात से जो उन्हें इमाम मुहम्मद बाक़िर से हासिल हुए मुख़तलिफ उलूम व फुनून और मज़हब के शोबों में किताबें तसनीफ कीं। ज़ेल में हज़रत के कुछ शागिर्दों का ज़िक्र और उनकी तसानीफ के नाम दर्ज किये जाते है जिस से आपको अन्दाज़ा होगा कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) से इस्लामी दुनिया में इल्म व मज़हब ने कितनी तरक़्क़ी की।

1– अबान इब्ने तग़लब : यह इल्मे क़िराअत और लुग़त के इमाम माने गये हैं। सबसे पहले किताब ग़रीबुल कुर्आन यानी कुर्आन मजीद के मुशकिल अलफ़ाज़ की तशरीह इन्होंने तहरीर की थी और 141 हिजरी में वफात पायी।

2– अबुजाफर मुहम्मद इब्ने हसन इब्ने अबी सारह रवासी : इल्मे क़िराअत, नह्व और तफसीर के मशहूर आलिम थे। किताब अलफैसल मआनिल कुर्आन वग़ैरह पाँच किताबों के मुसन्निफ हैं। 101 हिजरी में वफात पायी।

3– अब्दुल्लाह इब्ने मैमून असवदुल क़दाह : इनकी तसानीफ से एक किताब मबअसे नबीए रिसालत मआब (स0) की सीरत और तारीख़े ज़िन्दगी में और एक किताब हालाते जन्नत व नार में थी। 105 हिजरी में वफात पायी।

4– अतिया इब्ने सईद औनी : पाँच जिल्दों में तफसीरे कुर्आन लिखी। 111 हिजरी में वफात पायी।

5– इस्माईल इब्ने अब्दुर्रहमान अलअदी अलकबीर : यह मशहूर मुफस्सिरे कुर्आन हैं जिनके हवाले तमाम इस्लामी मुफस्सिरीन ने सदी के नाम से दिये हैं। 127 हिजरी में वफात पायी।

6– जाबिर बिन यज़ीद जुअ्फी : इन्होंने इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) से पचास हज़ार हदीसें सुनकर याद कीं और एक रिवायत में सत्तर हज़ार की तादाद बतायी गयी है इसका ज़िक्र सिहाहे सित्ता में से सही मुस्लिम में मौजूद है। तफसीर, फिक़्ह और हदीस में कई किताबें तसनीफ कीं। 128 हिजरी में वफात पायी।

7– अम्मार बिन मुआविया दहनी : फिक़्ह में एक किताब तसनीफ की। 133 हिजरी में वफात पायी।

8– सालिम बिन अबी हफ्सा अबुयूनुस कूफी : फिक़्ह में एक किताब लिखी। वफात 137 हिजरी में पायी।

9– अब्दुल मोमिन इब्ने क़ासिम अबुअब्दुल्लाह अन्सारी : यह भी फिक़्ह में एक किताब के मुसन्निफ हैं। 147 हिजरी में वफात पायी।

10– अबुहमज़ा शिमाली : तफसीरे कुर्आन में एक किताब लिखी। इसके अलावा किताब अन्नवादिर और किताब अज़्ज़ोहद भी इनके तसानीफ में से हैं। 150 हिजरी में वफात पायी।

11– ज़ुरारह इब्ने अईन : बड़े बुज़ुर्ग मर्तबा शीआ आलिम थे। इनकी इल्मे कलाम और फिक़्ह और हदीस में बहुत सी किताबें हैं। वफात 150 हिजरी में पायी।

12– मुहम्मद बिन मुस्लिम : यह भी बड़े बुलन्द पाया बुज़ुर्ग थे। इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) से तीस हज़ार हदीसें सुनीं। बहुत सी किताबों के मुसन्निफ हैं जिनमें से एक किताब थी चहारसद मस्अला दर अबवाब हलाल व हराम। वफात 150 हिजरी में पायी।

13– यहया बिन क़ासिम अबुबसीर असदी जलीलुल मर्तबा बुज़ुर्ग थे। किताब मनासिके हज, किताब योम व लैईलह तसनीफ की। 150 हिजरी में वफात पायी।

14– इस्हाक़ कुम्मी : फिक़्ह में एक किताब के मुसन्निफ हैं।

15– इस्माईल बिन जाबिर ख़सअमी कूफ़ी अहादीस की कई किताबें तसनीफ कीं और एक किताब फ़िक़्ह में तसनीफ की।

16– इस्माईल बिन अब्दुल ख़ालिक़ : बुलन्द मर्तबा फक़ीह थे। इनकी तसनीफ से भी एक किताब है।

17– बरोअल–अस्काफ अल अज़्दी : फ़िक़्ह में एक किताब लिखी।

18– हारिस बिन मुग़ीरह : यह भी मसाएले फ़िक़्ह में एक किताब के मुसन्निफ हैं।

19– हुज़ैफा बिन मनसूरे ख़ज़ाओी : इनकी भी एक किताब फ़िक़्ह में थी।

20– हसन बिन अस्सरी अलकातिब : एक किताब तसनीफ की।

21– हुसैन बिन सौर इब्ने अबी फाख़्ता : किताब अन्नवादिर तहरीर की।

22– हुसैन बिन हम्माद अबदी कूफ़ी : एक किताब के मुसन्निफ हैं।

23– हुसैन बिन मुसअब बजली : इनकी भी एक किताब थी।

24– हम्माद बिन अबी तलहा : एक किताब तहरीर की।

25– हमज़ा बिन इमरान बिन अईन : ज़ुरारह के भतीजे थे और एक किताब के मुसन्निफ थे।

यह चन्द नाम हैं उन कसीर उलमा व फुक़हा व मुहद्दिसीन में से जिन्होंने इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) से उलूमे अहलेबैत को हासिल करके किताबों की सूरत में महफ़ूज़ किया। यह और फिर इसके बाद इमाम जाफर सादिक़ (अ0) के दौर में जो सैकड़ों किताबें तसनीफ हुईं यही वह सरमाया था जिस से बाद में काफी, मन ला यहज़र, तहज़ीब और इस्तेबसार ऐसे बड़े हदीस के ख़ज़ाने जमा हो सके और जिन पर शीअीयत का आसमान दौरा करता रहा है।

एख़लाक़ व औसाफ : आपके एख़लाक़ वह थे कि दुश्मन भी क़ायल थे। चुनानचे एक शख़्स अहले शाम में से मदीने में क़याम रखता था और अकसर इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) के पास आकर बैठा करता था उसका बयान था कि मुझे इस घराने से हरगिज़ कोई ख़ुलूस व मुहब्बत नहीं मगर आपके एख़लाक़ की कशिश और फसाहत वह है जिसकी वजह से मैं आपके पास आने और बैठने पर मजबूर हूँ।

उमूरे सलतनत में मशोरा : सलतनते इस्लामिया हक़ीक़त में उन अहलेबैते रसूल (स0) का हक़ थी मगर दुनिया वालों ने माद्दी इक़्तेदार के आगे सर झुकाया और उन हज़रात को गोशा नशीनी इख़्तियार फरमाना पड़ी। आम अफरादे इन्सानी की ज़हनियत के मुताबिक़ इस सूरत में अगर हुकूमते वक़्त किसी वक़्त उन हज़रात की इमदाद की ज़रूरत महसूस करती तो साफ तौर पर इन्कार में जवाब दिया जा सकता था। मगर इन हज़रात के पेशे नज़र अली ज़र्फ़ी का वह मेयार था जिस तक आम लोग पहुँचे हुए नहीं होते। जिस तरह अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ0) ने सख़्त मौक़ों पर हुकूमते वक़्त को मुफीद मशोरे देने से दरेग़ नहीं किया इसी तरह इस सिलसिले के तमाम हज़रात ने अपने–अपने ज़माने के बादशाहों के साथ यही तर्ज़े अमल इख़्तियार किया चुनानचे हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) के ज़माने में भी ऐसी सूरत पेश आयी। वाक़ेआ यह था कि हुकूमते इस्लाम की तरफ से उस वक़्त तक कोई ख़ास सिक्का नहीं बनाया गया था बल्कि रूमी सलतनत के

सिक्के इस्लामी मुमालिक में भी राएज थे। वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में सलतनते शाम और सुलताने रूम के दरमियान इख़्तेलाफ पैदा हो गया। रूमी सलतनत ने यह इरादा ज़ाहिर किया कि वह अपने सिक्कों पर पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की शान के ख़िलाफ कुछ अलफाज़ नक़्श करा देगी। इससे मुसलमानों में बड़ी बेचैनी पैदा हो गयी। वलीद ने एक बहुत बड़ा जलसा मुशावेरत के लिये मुनअक़िद किया जिसमें आलमे इस्लाम के मुमताज़ अफ़राद शरीक थे इस जलसे में इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) भी शरीक हुए और आपने यह राय दी कि मुसलमानों को खुद अपना सिक्का ढालना चाहिये जिसमें एक तरफ ''ला इलाहा इल लल्लाह'' और दूसरी तरफ ''मुहम्मद रसूलुल्लाह (स0)'' नक़्श हो। इमाम (अ0) की इस तजवीज़ के सामने सरे तसलीम ख़म किया गया और इस्लामी सिक्का इसी तौर पर तयार किया गया।

सलतनते बनी उमय्या की तरफ से मुज़ाहमत : बावजूद कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) मुल्की मामलात में कोई दख़ल न देते थे और दख़ल दिया भी तो सलतनत की ख़्वाहिश पर वक़ारे इस्लामी के बरक़रार रखने के लिये मगर आप की ख़ामोश ज़िन्दगी और ख़ालिस इल्मी और रूहानी मरजेईयत भी सलतनते वक़्त को गवारा न थी चुनानचे हिशाम बिन अब्दुल मलिक ने मदीने के हाकिम को ख़त लिखा कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) को उनके फ़रज़न्द हज़रत जाफर सादिक़ के साथ दमिश्क़ भेज दिया जाये उसको मन्जूर यह था कि हज़रत की इज़्ज़त व वक़ार को अपने ख़याल में धचका पहुँचाया जाय। चुनानचे जब यह हज़रात दमिश्क़ पहुँचे तो तीन दिन तक हिशाम ने मुलाक़ात का मौक़ा नहीं दिया। चौथे दिन दरबार में बुला भेजा एक ऐसे मौक़े पर कि जब वह तख़्ते शाही पर बैठा था और लश्कर दाहिने और बायें हथियार लगाये लाईन से खड़ा हुआ था और बीच दरबार में एक निशाना तीरअन्दाज़ी का मुक़र्रर किया गया था और सलतनत के रईस लोग उसके सामने शर्त बाँध कर तीर लगाते थे। इमाम (अ0) के पहुँचने पर इन्तिहाई जुराअत व जसारत के साथ उसने ख़्वाहिश की कि आप भी इन लोगों के हमराह तीर लगायें। हर तरह से हज़रत ने माज़रत फरमायी मगर उसने क़ुबूल न किया। वह समझता था कि आले मुहम्मद (स0) तवील मुद्दत से गोशा नशीनी की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। इनको जंग के फ़ुनून से क्या वास्ता और इस तरह मन्जूर यह था कि लोगों को हंसने का मौक़ा मिले मगर वह यह न जानता था कि उनमें से हर एक फ़र्द के बाजू में अली (अ0) की क़ुव्वत और दिल में इमाम हुसैन (अ0) की ताक़त मौजूद है वह हुक्मे इलाही और फ़र्ज़ का एहसास है जिसकी वजह से यह हज़रात एक सुकून और सुकूत का मुजस्समा नज़र आते हैं। यही हुआ कि जब मजबूर होकर हज़रत ने तीर व कमान हाथ में लिया और चन्द तीर पै दरपै एक ही निशाने पर बिलकुल एक ही नुक़ते पर लगाये तो मजमा ताज्जुब और हैरत में डूब गया और हर तरफ से तारीफें होने लगीं। हिशाम को अपने तर्ज़े अमल पर पशेमान होना पड़ा। इसके बाद हज़रत से मसलए इमामत और फ़ज़ाएले अहलेबैत पर गुफ्तगू हुई जिसके बाद उसको यह एहसास हुआ कि इमाम (अ0) का दमिश्क़ में क़याम कहीं आम ख़िलक़त के दिल में अहलेबैत की अज़मत क़ायम कर देने का सबब न हो इसलिये उसने आपको वापस मदीने जाने की इजाज़त दे दी

.... **(बक़िया पेज–14 पर)**

को उखाड़ लिया और उसे नीचे फेंक दिया।

अपने मज़हबी तक़्वे और अल्लाह की इबादत में भी हज़रत अली का कोई सानी नहीं था। बाज़ अफ़राद की इस शिकायत के जवाब में कि अली (अ0) उनसे नाराज़ हैं पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने जवाब दिया कि : ''अली की सरज़निश न करों क्योंकि वह खुदाई इन्बेसात और परागन्दगी के आलम में हैं।''

रसूले इस्लाम (स0) के एक सहाबी अबुदरदा ने मदीने के खजूरों के बाग़ में एक दिन हज़रत अली (अ0) के जिस्म को इस तरह ज़मीन पर पड़ा हुआ देखा जैसे वह कोई सख़्त लकड़ी हो। वह हज़रत अली (अ0) के घर गये ताकि वह उनकी शरीके हयात और पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की साहेबज़ादी को इसकी इत्तेला दें और इज़्हारे ताज़ियत करें। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की साहेबज़ादी ने कहा कि ''अली का इन्तेक़ाल नहीं हुआ है, बल्कि वह ख़ौफे खुदा से बेहोश हो गये हैं। उन पर ऐसी कैफियत अकसर तारी हो जाती है।''

ज़रूरतमन्द और मुफलिस असहाब पर हज़रत अली (अ0) की नवाज़िशों के बहुत से क़िस्से मशहूर हैं। नीज़ उन लोगों पर रहम व करम की कहानियाँ भी हैं जो परेशाँ हाली और फाक़ा कशी का शिकार थे। हज़रत अली (अ0) जो कुछ कमाते थे वह ग़रीबों और ज़रूरत मन्दों की मदद पर ख़र्च कर देते थे और खुद तन्गी में और सदगी के साथ अपनी ज़िन्दगी बसर करते थे। हज़रत अली (अ0) को काश्तकारी से बेहद लगाव था, और वह अपना बेशतर वक़्त कुओं की खुदाई, शजरकारी, और खेतों की सिंचाई में सर्फ करते थे। लेकिन उन्होंने जो काश्त की थी और जो कुएँ तामीर किये थे, उन्हें ग़रीबों के लिये वक़्फ कर दिया था। आपके इन अतियात की मालियत जो ''अतियाते अली'' के नाम से मशहूर थे, आपकी उम्र के अवाख़िर में 24 हज़ार तलाई दीनार थी, जो कि एक क़ाबिले ज़िक्र रक़म है।

□□□

(बक़िया इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0)..

मगर दिल में हज़रत के साथ अदावत में और इज़ाफा हो गया।

वफात : सलतनते शाम को जितना हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की जलालत और बुज़ुर्गी का अन्दाज़ा होता गया उतना ही आपका वजूद उनके लिये नाक़ाबिले बर्दाश्त महसूस होता रहा। आख़िर आप को उस ख़ामोश ज़हर के हरबे से जो अक्सर सलतनते बनी उमय्या की तरफ से काम में लाया जाता रहा था, शहीद करने की तदबीर कर ली गयी। वह एक ज़ीन का तोहफा था जिसमें ख़ास तदबीरों से ज़हर पोशीदा किया गया था और जब हज़रत इस ज़ीन पर सवार हुए तो ज़हर जिस्म में सरायत कर गया चन्द रोज़ करब व तकलीफ में बिस्तरे बीमारी पर गुज़रे और आख़िर सात ज़िलहिज्जह 114 हिजरी को 57 बरस की उम्र में वफात पायी।

आपको हस्बे वसीय्यत तीन कपड़ों का कफन दिया गया जिनमें से एक वह यमनी चादर थी जिसे ओढ़ कर आप रोज़े जुमा नमाज़ पढ़ते थे और एक वह पैराहन था जिसे आप हमेशा पहने रहते थे और जन्नतुल बक़ीअ में उसी कुब्बे में कि जहाँ इमाम हसन (अ0) और इमाम ज़ैनुलआबेदीन (अ0) दफन हो चुके थे हज़रत भी दफन किये गये। □□□